"मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं (यीशु) ही हूं।" युहन्ना १४:६

जीवन का मार्ग

Hindi

www.thelivingway.in

Volume 12 | Issue 30 | July 2020

EDITORIAL BOARD

Publication Director
Pr. LIVINGSTON ZECHARIAH

Chief Editor
Sis. BINCY LIVINGSTON

Team
Pr. JOANSON ZAHARIYA
Pr. DANIEL P.S.
Pr. BIJU KOSHY
Bro. JOHN K. ALEXANDER
Bro. JOHN P. ANTONY
Bro. IMMANUEL MANI
Bro. BALASUNDARAM
Sis. MEENA AMUTHAN
Sis. SOPHIE VARUGHESE
Sis. SUSAN SARAH GEORGE
Sis. SHARINE J.

Computer Designing
ANON GRAPHIX
Chembur

Printing
BHANDUP OFFSET

Publisher
THE LIVING WAY MINISTRIES
Mumbai - 400 078.

CONTENTS

समृद्धी 4
प्रसिद्ध स्त्रीयाँ 10
जीवन की मार्ग मिषनरी सेवकाईयाँ .. 13
प्रार्थना योद्धा जॉर्ज मुल्लर 14

Hear our new worship song
KALANGARAI VILAKKAAM
YouTube
www.youtube.com/livingwayindia
LIVINGWAY MEDIA
LIKE | SHARE | SUBSCRIBE

For your Offerings & Donations ......
The Living Way Ministries
and Charitable Trust
A/c. No. 35061155727
(or) Livingston Zechariah
A/c. No. 10870977445
State Bank of India,
Bhandup Branch (0562), Mumbai.
IFS Code : SBIN0000562

Food for Thought

"I am still in the land of the dying;
I shall be in the land of the living soon"

मन खोलकर आपसे ....

प्रभु में प्रियों,

नया साल को आनंद से हम स्वागत किया है। मन में बहुत विचारों, चिन्ताएं और योजनाएं रहकर, वो पूरा होने का इंतजार करते ही एक-एक समस्या भी आ गयी है। वह सिरफ संसार के विभिन्न राज्यों में ही नहीं, बल्की हर एक व्यक्ति को भी इस छह महीने से परेशानी में डाल दिया है।

अमेरिका का हमला से इरान के जनरल खासं सुलैमानी का मृत्यु और उसके बाद में का घटनाएं एक तीसरा युद्ध का मौका बना रहा है ऐसा एक संदेश हुआ है। भारत का नागरीकता का निर्णय करने को चाहता एक समाज का कहना था कि; सिरफ जन्म से नहीं, परन्तु धर्म अनुसार भी नागरीकता को निर्णय करना है। ये सभी विषय समाचार पत्रों में मुख्य था, तो सब इस बातों को जानते है। महंगाई, जैसा बात भी इस समय आ गई। विश्व नेताओं को भी भयभीत करते हुए, आयु के बीच में अनेकों को अंत कर दिया 'कोरोणा या कोविड-१९' महाव्याधी आज भी दुनिया को नाश कर रहे है। सि के साथ भुकंप, निसर्ग-जैसा तूफान और टिड्डियों का आक्रमण ये सब देखकर मनुष्य भय भीत हुई है।

गये कुछ महीने से दुनिया के लोग कुछ बातों सीख लिया है कि, मानुषिक बल से कुछ लेना असंभव है, ऐसा समय आता है कि कुछ भी नहीं कर सकता, अस्पताल से चंगा हो सकता है सोचा तो वो भी नहीं है। आराधना मंदिरों को बन्द किया तब नव मीडिया से घर मन्दिर के रूप में बदलने को प्रभु सहायता किया। इसलिये ऑनलाईन प्रार्थना ग्रुप, और कुछ अलग मीडिया का द्वारा भी परमेश्वर का वचन सब के पास पहुँचा है।

मनुष्यों में शरण लेने से प्रभु में शरण लेना उत्तम है। (भ.सं. ११८:८). प्रभु में शरण रखता एक व्यक्ति को आगे भी चलने को सहायता मिलती है। बलहीन मनुष्य पर भरोसा रखना व्यर्थ है। लेकिन, कोई भी स्थिती में पुकारातो समीप आता परमेश्वर हमारे लिये है - यह विश्वास प्रभु के बच्चों को सामर्थ देता है। बीमारी में, दर्द भरा समय पर, एकान्त की अवस्ता मेंच हमारे संग आने को, शांती का वचन देने को प्राण प्रिय हमारे संग है। इसलिये आज सामना करता सो समस्याओं के बीच में भी प्रभु पर शरण रखना है। क्योंकि, हमारेलिये कार्य करने को प्रभु के हाथ बढाया है। उस में शरण रखनेवाला किसी को वह कभी भी न छोडेगा या न त्यागेगा।

जीव मार्ग के कार्यों को प्रभु यहाँ तक ले आया है और इसकेलिये मैं धन्यवाद करता हुँ। पीछले १४ साल भी प्रभु ने इस सेवकाई को आशिष की और १५ वाँ साल में प्रवेश होता इस समय, खासकर सेवकाई को प्रभु आगे बढाने केलिये प्रार्थना में याद रखिए। यहाँ तक सेवकाई आने को आप के प्रार्थना एक कारण हुआ है। फिर से प्रीर्थना में याद रखिए। मैं आपके लिये प्रार्थना करुँगा।

प्रभु हम सब को आशिष करे।

मसीह के प्रेम में,
आपकी बहन
बिन्सी लिविंगस्टण

0 93245 59533
pastorzlivingston@gmail.com

समृद्धि

Pastor Livingston Zechariah

परमेश्वर वायदा देता और पूरा करने वाला भी है। पवित्र शास्त्र में अनेक वायदाएँ, उसका पुरा होना और अपने भक्तों को वो सच्चा, ये सब हम देखते है। पुराना नियम के भक्तों को प्रभु कैसे सच्चा थे, उसी प्रकार आज भी अपने लोगों केलिये वह विश्वासयोग्य है। हम जो सेवा करता है वो परमेश्वर कौन है, और उनका दिया वादा का गहराई, लंबाई और ऊँचाई कितना बडा है, यह निर्णय हम सब को होना चाहिए। क्योंकि यह प्रतिकूल समय में भी हमें बलवन्त करते है। पुराना नियम का सभी भक्तों ने वादा किया प्रभु पर भरोसा रखा और उसकी वाट जोडते रहा था। इस इंतजार उनको परमेश्वर की ओर ले गऐ थे।

जिनको वायदाए बाकी रह गया है, उनके लिये एक अच्छ समाचार है। जो इंतजार करते रहा बातों को इस साल में तो भी उत्तर मिलेगा सोचकर रहा, फिर भी, वह अधुरा होकर एक साल चले गया। नये आशा के साथ, इस साल में, प्रभु कार्य करेंगे; अगर यही इच्छा के साथ रहता है तो, उस आशा न छोडते हुए प्रभु के संगा आ जाए। क्योंकि, जो वादा किया है, वो सचा है।

समृद्धि का वर्ष, जैसा इस २०२० में प्रभु हमें बढोतरी दे दिया है। 'बढोतरी' यह शब्द सुनने केलिये सभी चाहते है। इस को बहुत अर्थ है - आधिक्य, बहुतायत, बाहुल्य, विपुलता... इस शब्द के पीछे एक शब्द (आनंद) छिपा रहता है। यह केवल भौतीक ही नही है, पर आत्मीक भी है। क्योंकि प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी में आया है कि, वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ (योहान 10:10)। इसलिये, बहुतायत अर्थांत केवल हमारे भौतिक बातों पर ही चर्चा करना काफी नही है। तो भी, इस साल के शुरु में प्रभु के सन्तानों के आत्मीक-शारीरिक बातों में एक बढोतरी हो, यही आशा रखता हुँ।

नया साल में प्रेवेश हुआ हम को प्रभु दिया वादा का वचन है-यिर्मयाह 33:6 देख मैं इस नगर का इलाज करके इसके निवासियों को चंगा करूँगा; और उन पर पूरी शांती

और सच्चाई प्रकट करुँगा। बढोतरी की साल के अंतर से चंगाई, आरोग्य, शांती और समृद्धि प्राप्त करने को हर लागों को होना चाहिए। यह वचन स्वीकार करनेवाले हर एक को उन आशिषें प्राप्त होंगे।

यहूदियां के जिन्दगी का बहुत कठिनाई का समय भविषयवक्ता के रूप में यिर्मयाह को प्रञ्भु ने नियुक्त किया। बालक यिर्मयाह के द्वारा भविष्यवाणी आता समय ही, यहुदा मूर्तीपुजा और दुष्ट कामों मे लगे रहे थे; वहाँ उनको आनेवाला विपत्ती के चेतावनी दिया और लौट आने को कहा। यह वचन लौट आनेवालों को देता आशीष के बारे में बताता है। इन दिनों मे भी मन फिराके आनेवाले को इस वचन में दिया आशीष मिलेंगे। इस प्रकार के आशीष के बारे में पवित्र वचन के आधार पर यहाँ बताना चाहता हुँ।

1. भौतीक समृद्धि

2. आत्मीक समृद्धि

परमेश्वर के लोगों को ये दोनों आशिष प्रभु की ओर से आते है। हमारे आत्मीक आँखे खोनकर ऊपर, जो समृद्धि का सोताओं की ओर देखा जा सकता है तो, परमेश्वर के संग जीवन रहने के लिए हम तैयार होंगे। यह पढते परमेश्वर के प्रिय बच्चों, बढोतरी चाहता है तो वे मिलने का एक ही जगह है। समर्पण के साथ ऊँचाओ में आँख उठाएँ। आप केलिये यिर्मयाह 33:6 एक वायदा है।

1. भौतीक समृद्धि

यह परमेश्वर के बच्चों को प्रभु देता एक आशीष है। इस समृद्धि विविध रुप में आती है। परमेश्वर पहले प्रकृती को आशीष दी (उत्पत्ती 11:22). मनुष्य को आशीष दी (1:28). अब्रहाम को आशीष दी (12:2). सभ भक्तों को आशीष दी। ये सारे अनुग्रह पहले से ही परमेश्वर के मनुष्य को मिला भलाई है। ये सब के बदले मनुष्य परमेश्वर को कुछ भी न दे सकते है, परन्तु प्रभु चाहते है कि, मनुष्य दिल से धन्यवाद देना और परमेश्वर के संग बने रहना। यह भौतीक समृद्धि पाने के लिये हमारा प्रयत्न भी जरूरी है। क्योंकि जो लोग भलाई और बढोतरी प्राप्त हुआ है, वो प्रभु के द्वारा उपयोग हुआ था। भौतीक समृद्धि पाने को हम करने का कुछ बातों को हम यहाँ बताता है।

a) असंभव के बीच संभव होने को देखना

असंभव के बीच संभव होने का बातों को कैसा देख सकता है? यह परमेश्वर के बच्चों में भी देख सकता है। क्योंकि, उद्धार होने के पहले एक व्यक्ति शैतान का अधीन रहता है। लेकिन उद्धार होने के बाद पवित्र आत्मा से चलाया जाता है तो, असाध्यों में साध्य को देखना ज्यादा मेहनत का काम नही है।

मिधान के निमित्त इस्रएल बहुत कष्ट उडाना पडा था। लेकिन परमेश्वर अपने लोगों का रोना सुना था। परमेश्वर अपने हाथों में उपयोग करने को एक व्यक्ति केलिये इस समय चाहता था; तब अबीएजजेरी योआश का पुत्र गिदोन कटनी के समय उस का देख भाल करता था, यहोवा का दूत उसके पास आकर बुलाया (न्यायी. 6:11). सात साल मिधानियों के द्वारा संकट हुआ था। लेकिन, यहाँ, सब को नष्ट होते है तो भी अपना नष्ट होने को गिधोन नहीं चाहता था। उसको एक अलग सोच हुआ। क्योंकि सबी से छुडकारा केलिये वो देखते रहा था; वो बहुत डर से वहाँ बैडा था। इसलिये कि, वो झाड़ रहा था गेहुँ, परन्तु बैडता है कि दाखरस का कुण्ड के सामने। वहाँ उसका जीवन को भी हानी हो सकता है। क्योंकि, मिध्यानियों के कारण लोग गुफा में था, जंगलों में जाके छिपाकर रहते थे। परन्तु वहाँ गिधोन मौका को डूडता था। प्रियों, शत्रु का उपद्रव के कारण खेदित होकर रहते होगे। दूसरों ने धोका देने से दौडकर छिपाते रहते होगे। शैतान का काम जिन्दगी में और अपने कामों में भी सामना करता होगा। मिधानों जैसा बर्ताव करता बच्चा या, मेहनत से लिया संपत्ती नष्ट करता पीडी अपने को होगा, लेकिन, क्या वहाँ से छुडकारा मिलना चाहता है? गिधोन एक निर्णय किया, कि अपने भूमि की उपज मिधान का हाथ में फिर से न जाना। जिन्दगी में बहुत प्रतिकूल है, पर शैतान को अवसर न देने को निर्णय किया।

गिधोन का दिल में जो शुरवीरता है, वो परमेश्वर पसंद किया। इसलिए 'गिधोन' ऐसा कहने का जगह पर 'शूरवीर सुरमा' ऐसा उसको कहा है। यही गिधोन जो 'यरुबाल' है, उसके द्वारा ही परमेश्वर इस्राएल को मिधान का हाथ से छुडाने चाहता था। यह पढते प्रिय भाई और बहन, अवसर को खोजने का सामर्थ तुमें है। बाहरी आँखों से देखा तो सिर्फ असाध्य ही देखेगा। ऐसा लगता है कि सब शून्य है। लेकिन अंदरी आँखे खोलागो तो असंभव के बीच संभव देख सकता है। हा, वह तुम्हे से बाहर आने दे। भौतिक समृद्धि उसी के द्वारा ही अनुभव करेगा। आकाल में उन्नती को देखे, प्रकिकुल में अनुकूल को डूडे।

b) प्रभु को परखकर देखना

यह बताया है कि भौतिक समृद्धि प्रभु का एक भलाई है। (मलाकी 3:10). प्रभु के लोग भलाई मिलने केलिये प्रभु को परखने को बताया है। नितीवचन 3:10 में 'इस प्रकार तेरे खत्ते भरे पूरे होंगे, और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा'। नितीवचन 3:9 में बताया जैसा करनेवालों को मिलत प्रतिभल 10 वाँ वजन में बताता है, प्रभु ने दिया अनुग्रह को समझकर प्रभु को इस्राएल दे दिया (व्यवस्था. 26:11-10) को आनंद दायक था। प्रभु उनको दिया छुडकारा का बदला देने को कुछ भी नही है, कम से कम सब चीजों का पहला फल से प्रभु का आदर करने को वो तैयार हो गये।

मैं प्रभु को जो कुछ देता है वो, मुझ मेरा है उसमें से नहीं, परन्तु जो कुछ प्रभु मुझे दिया है उसी में से है। यही मन हमें होना चाहिए, क्योंकि, अच्छे मन से न देता है तो वो व्यर्थ होता है। ऐसा नहीं है कि, प्रभु को देने से कुछ कम होगा हम मांगने से ज्यादा देने को प्रभु विस्वासयोग्य है समझकर मेरा छोटा-छोटा चीज है वो मैं प्रभु को अर्पण करता हुँ तो मेरा भंडार बहुतायत से भरेगा, मेरा दाखरस का कुण्ड भी भरे रहेगा।

देने के द्वारा प्रभु को आदर और प्रेम करने का बारे में वचन बार-बार याद दिलाता है। (मलाकी 3:10). सारे दशमोश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे, और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोके तुम्हारेलिये खोलकर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हुँ कि नहीं। (नीती. 11:24, 25, 19:17, 22:9, स.भो 11:1,2, फिलिपी 4:19).

भौतिक समृद्धि केलिये प्रभु को देने में कुछ कमी न हो। लेकिन उत्पत्ती 4:4 बताता है कि - यहोवा हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया। कैन और उसके भेट को ग्रहण न किया। हमारे धन्यवाद का भेंट प्रभु प्रसन्न करने से पहले, हमें प्रसन्न होना चाहिए। उस के बाद ही भेंट को प्रसन्न करेगा। इसलिये समृद्धि होने को देना अच्छा है। लेकिन देनेवाले पहले प्रभु के सामने ग्रहण करना जरुरी है।

2) आत्मीक समृद्धि

भौतीक समृद्धि प्रभु का दान है, तो आत्मीक समृद्धि भी उसी का जैसा है।

a) बहुतायत का आनंद :

भ.सं. 36:8 बताता है - तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी

सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा। पवित्र लोग इकट्ठा होता कलीसीया परमेश्वर का मंदिर है तो, आराधना में प्रभु के लोगों को अच्छा भोजन मिलना चाहिए। आज कई कलीसीया में लोग कम हो गयी है। यह वचन का कमी का कारण है। आत्मप्रशंसा और स्वार्थी बनता है तो कलीसीया के नायक को वहाँ कोई महत्व नहीं हैं। इसी प्रकार का आराधना में शामील होते लोग आत्मीक भोजन न मिलने का कारण आत्मीक रीती में बलहीन होता है। इसलिये वहाँ समृद्धि न मिलता है।

प्रार्थना, वचन, अभिषेक, आत्मीक वरदान ये सब प्रकट होता जगह है – कलीसीया। भ. स. 42:1 में हरणी उस का प्यास बुझाने को आता जगह है – नदी। आनंद के साथ पीकर खुशी से वो वापस जाता है। इसी प्रकार आनंद की समृद्धि केलिये प्रभु के चरणों में रहे रहना। व्यक्तिगत प्रार्थना ओर आराधना से आनंद अनुभव कर सकता है। लेकिन आनंद का समृद्धि प्रभु के लोगों का इकट्ठा होने में होते है। वहाँ एक को शान की आत्मा, एक को पहिचान का खान, एक को विश्वास, एक को चंगाी, विविध भाषा... इसी प्रकार एक ही आत्मा से अलग–अलग दान मि मिलते है। आत्मीक समृद्धि की अनुभव केलिये, कुछ लोगों का जैसा आराधना न छोडना है। (इब्रा. 10:24) यह वचन स्पष्ट करता है।

संगती विश्वासी के आत्मीक जीवन का बढोतरी केलिये सबसे महत्वपूर्ण है। यरुशलेम की पहली कलीसीया, आराधना केलिये एकत्रीत होते समय ही, घर–घर में भी इकट्ठा होते थे। इसलिये घर–कलीसीया बढते थे। (प्रेरित 2:46-47). कई–कई शहरों में भी कलीसीया का शुरु हुआ। यह है कलीसीया आज भी बढने का कारण। विश्वासीयों के सख्या बड गया। प्रभु हम सबको किया बातों को कलीसीया में बताने से बलहीन और थक्के हुए लोग बलवन्त और सामर्थ पाएलगा। आनंद का समृद्धि इस दुनिया में अनुभव होने को, दुसरा किसी से भी न होगा, परमेश्वर की चरणों से ही मिलेगा। यहोशु तंबु को छोडकर जाने को न चाहता था, हन्ना प्रभु के मंदिर में ही समय बिताते रहा था, ये सब इस आनंद का ही कारण है। (निर्ग. 33:11, लुका 2:36,37).

b). बहुतायत का जीवन :

बहुतायत जीवन परमेश्वर अपने लोगों को देता एक मूल्यवान धन है। यह प्राप्त होने को आत्मीक जीवन बहुत जरूरी है। 3 युहन्ना 2. में ''जैसे तू आत्मीक उन्नती कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नती करे और भला चंगा रहे।''समृद्ध जीवन प्रभु से

पाया एक व्यक्ति ही सुख शांती में रह सकता है। अबी भी इस संसार में दुःख और मुसीबत है। लेकिन वो जयवन्त है (युहन्ना 10:10) चोर केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। चोर जीवन का हानी करता है, यीशु जीवन देता है। (युहन्ना 5:40).

इस समय भी जीवन का हानी करता दुश्मन गुमते फिरते है। समृद्धि मतलब-पूरी रीती से भौतिक-यही है उसका मत। लेकिन प्रभु का बच्चा यह समझना है कि, अनंत जीवन से बढकर कोई समृद्धि नही है। अनंत जीवन देने को और बहुतायत से देने को यीशु आया है। उसी समय इस संसार का हर जरुरत भी भी उस में समा है। लोगों को बहुतायत जीवन देना-यही है यीशु का लक्ष्य; क्योंकि युहन्ना 9 में अंदो को प्रभु चंगा किये, और युहन्ना 4 के समरी स्त्री... ये सबी में प्रभु का लक्ष्य अनंत जीवन ही है।

यह पढते प्रियों, तुझे देते आरोग्य, चंगाई, चमत्कार और भलाई ये सब को पीछे प्रभु को एक ही लक्ष्य है कि जीवन और बहुतायत जीवन। केवल भौतिक बातों के पीछे नरहना, क्योंकि अनंत जीवन है सबसे मुख्य लक्ष्य। मगदनली मरीयम से सात भुत को निकाला कि, उसको अनंत जीवन में लाये। पांच रोटी से पांच हजार को खिलाया, यह हम जानते है कि उनको आत्मीक जीवन भी मिलना है। सिर्फ भोजन देना ही नही था उनका लक्ष्य, परंन्तु अनंत जीवन था। तुम्हारे जिन्दगी में कुछ पाना है तो, याद रखना है कि अनंत जीवन है सबसे महत्वपूर्ण। इस अनंत जीवन बहुतायत से दिया है। यह भौतिक नही है, पर सारे दुनिया का कर्ता प्रभु से मिला आत्मीक जीवन है।

यह समृद्धि इसलिये दिया है कि, हम भी उन कों को यह दे सके। अनेकों को यीशु के बारे में बताने केलिये। यीशु के समृद्धि से हम यह पाना है (यो. 1:16)

इस नये साल में भी, यह पढनेवालों को समृद्धि देने को प्रभु चाहते है। लेकिन, समृद्धि जो भौतिक बातों केलिये हम दौडना नहीं, परन्तु आत्मीक बातों का समृद्धि पाने के लिये तैयार रहे तो बाकि सब भलाईयाँ आ जाता है। लेकिन सचे मन से अवसर ढुडेंगे तो, और प्रभु को परखकर देखेंगे तो 2020 समृद्धि का वर्ष के रूप में बढलेगा। प्रभु से मिलता शांती, चंगाई, आरोग्य और सत्य के समृद्धि प्राप्त होने को प्रार्थना, वचन और उपवास में लगे रहे। पहले प्रभु का राज्य और उसके धार्मिकता को डूडे, ये सब तुम्हे आजाएगा। (मत्ती 6:35) आमेन।

●

प्रसिद्ध स्त्रीयाँ

Mrs. Bincy Livingston

परमेश्वर के योजना मों स्त्रीयाँ का स्थान श्रेष्ठ है। पहला मनुष्य नर, और उसके बाद नर से नारी की सृष्टी की। लेकिन, मसीह में दोनों एक है। मनुष्य का आखों में स्त्री कमजोर जैसा रहेगा। परन्तु, वह प्रभु के हाथ में का एक हथ्यार है। उसी समय यह परिवार में दीपक का जैसा कार्य करती है। यह बताने में कोई बुरा नही है कि, स्त्री अनेक आदरणीय पद के योग्य है। क्योंकि, उसने, 'परिवार'-इस महत्व स्थापन को बनाता है और वहाँ रोशनी देता एक प्रतिभा भी है।

'प्रसिद्ध स्त्रीयाँ' इस पंक्ती में इस महिना का प्रधान व्यक्ति 'लूत की पत्नी' है। पवित्र शास्त्र में लिखा कोई भी घटना उनवसर पर आया नही है। प्रभु के भक्तों का वचन भी झूट नहीं है। परन्तु हर समय हर जगह पर और हर लोगों को मानने का बात है। भक्ती के साथ माननेवालों को यह वचन हमेशा आशिषित है। लूत की पत्नी भी इसी रीती से हमें दिखाता एक व्यक्ति है, इसलिये यह पवित्र वचन में बताया है।

पवित्र वचन में कुछ लोगों का अनुभव बताता है, परन्तु उनका नाम न दिया है। उस में भी प्रभु का योजना है। पुराना नियम में इस स्त्री के बारे में ज्यादा लिखा नही है। फिर भी, नया नियम में लूत की पत्नी के बारे मे बताता है (लूका 17:32).

इस संसार का जिन्दगी कैसे रहना है? हमारे स्वर्गीय दर्शन कैसा होना, परिवारिक जिन्दगी, बच्चों को कैसी संभालना... इस प्रकार का अनेक विचारों को इस छोटा वचन से व्यक्त करता है। बुरे खबर से प्रसिद्ध हुआ एक स्त्री है लूत की पत्नी। उसकी स्वभाव सिर्फ परिवार को ही नहीं बल्की उस राज्य को भी कैसा प्रभाव हुआ, यह हम यहाँ पर देखेंगे।

1. आज्ञाकारी न होना

लूत की पत्नी आज्ञा उळ्लंघन करने वालों का एक दृष्टांत है। क्योंकि, ''अपना प्राण लेकर भाग जा, पीछे की ओर न ताकना, और तराई भर में न ठहरना'' (उत्पत्ती 19:17). यह लूत और उनका परिवार को दिया आदेश है। वहाँ छोड के जाने का मन नहीं था तो, वो पीछे मुडकर देखा और इसलिये नमक का खम्भा बन गई। प्रभु को प्रेम करना से रोखते कोई भी कार्य अगर है तो, उसे छोड दे, क्योंकि, प्रभु केलिये आगे आकर फिर पीछे जाना किसी को अच्छा नहीं है। वह आज्ञाकारी नहीं हुआ तो शापित बन गई।

2. भौतिक बातों की चिंता से भरी थी।

यह एक साधारण बात है कि, एक स्त्री जहाँ रहती थी, उस वातावरण और लोगों को भी भुलकर जाना। लूत की पत्नी बी उस देश के लोगों से मिले जुले थे। फलदायक देश, समृद्धि, दाख की बारियाँ, गाय-बकरियाँ, चराई आदि चीज़ों को छोडकर जाना उसको सोच भी न सकती थी।

वह स्वर्गीय बातों से और प्रभु का वचन से बडकर संसारिक बातों की चिंता से भरी थी। सच में, संसार से प्रेम रखना परमेश्वर का विरोध है। इसलिये तो ही, वह प्रभु के बात को न मानती थी। उसकी दोनों दामादों सदोम का था। क्या यह प्रभु का बच्चे न था? यह कैसे मालूम हुआ? 'तुम यहाँ से उठकर चले जा, पर वह अपने दामादों की दृष्टि में ठट्टा करनेवाला जान पड़ा' (उत्पत्ती 19:14). वे भी आग से खत्म हुआ।

एक मनुष्य सबसे मुख्य बात अपना 'जिन्दगी' है। यह लूत की पत्नी भूल गई थी। क्योंकि, इस संसार का संपत्ती उसकी जिन्दगी में सबसे बडा है करके उसने सोचे। वो छोडकर न जा सका, इसलिये वह पीढचे मुडकर देखी। आज भी लोग अपने जिन्दगी भुलकर संपत्ती के पीछे जाता है। कैसा भी कमाना, जमा करना सिर्फ यही चिंता है। इसलिये वो जिन्दगी भर मेहनत करते हुए धन जमा करता है, लेकिन, बच्चे उसका मजा उडाकर वो नष्ट करते रहते है। शांती से खाते-पीते रहेगा सोचा, पर बीमार पडे। 'अनांवश्य संसारिक चिन्ता और लालच अपनी जिन्दगी को खराब करेगा', यही है लूत की पत्नी हमें देता चेतावनी। इसलिये जिन्दगी बहुमूल्य है। उसका नष्ट न करना। प्रभु के बातों को महत्व देना। प्रभु के साथ चलते रहे। संसार से प्रेम प्रभु का प्यार से दूर हटाता है, इसलिये ईश्वरीय बातों को महत्र दे। भ.स. 62:10 - चाहे धन सम्पत्ती बढे, तौ भी उस पर मन न लगाना।

3. अपने आपसे नारा में गिरा स्त्री

अनावश्य कारण से अपने आपकी नाश हुई। सिर्फ वह ही नहीं, पर उसकी बेटीयाँ भी नाश में गिरी। क्योंकि, पत्नी के रूप में वह सही नही था तो सदोम का पाप, वो बेटियाँ में भी आयी। यदि पहाड में चलता समय लूत की पत्नी भी उसके साथ था तो इस विपत्ती न आता था। सदोम का पाप, मतलब, दोनों बेटीयाँ अपनी पिता से बुरा किया। (उत्पत्ती 19:33-38). इस पाप का कारण उसका पत्नी ही है, क्योंकि, आगर माता सही रीती से नहीं चलते तो बच्चे बिगडने का शक्यता है।

यह पढते प्रिय माताजी, और बहन जी, क्या यह लूत की पत्नी की अनुभव है तो, आपके जिन्दगी कैसे है? बच्चों के सामने अच्छे चाल-चलन है क्या? यदि मौका आगया तो बच्चे पाप करता है क्या? प्रभु के चरणों में गुडने में बैठने को तैयार है क्या? आलसी बातों

में या सोषल मीडीया में समय निकालता है तो ध्यान रखना कि, स्वयं और अपने बच्चे का भी नाश हो सकता है। आगे का जिन्दगी भय-भक्ति के साथ बिताने को समर्पण किया है तो आप सुरक्षित रहने को मौका है। हाँ, स्वयं नाश न हो।

सदोम का पाप, सिर्फ सुखशांती प्रभु से दूर होना और अपने आपसे नाश होने के अलावा और कुछ न देती है। प्रभु का बच्चों को भले होना, यह कोई बुरा नही है। परन्तु, वो परिवार तोडने में मत होना है। लूत आगे बढते तो भी उसका पत्नी पीछे सदोम में ही रही थी। संसार बहुत जल्दी आगे चलते है। वहाँ, संसार के मित्रता में हमारे पैर रोखे न रहना है।

प्रसिद्धि मिलने को चाहते प्रिय बहन, यरदन नदी के पश्चिम-दखिन दिशा की ओर सदोम पहाड के समीप नमक का खम्ब दिखेगा। अरब लोग उस को लूत की पत्नी कहता है। दुनिया तुम्हारे ओर देख कर क्या बोलेगा। प्रसिद्ध होने केलिये काम न करे। पर हमारे भलाई से प्रसिद्ध होना है। लूत की पत्नी हमारेलिये एक पाढ रहे। आज्ञाकारी होकर, संसार का प्रेम छोडकर, स्वयं नाख न होते हुए ईश्वरीय प्रेम में अपना और दूसरे का भी मुक्ती केलिये प्रभु के कल्पना को पालन करते हुए आगे बढे। पभु हमें आशिष दे। ●

बाइबिल क्वीस - उत्तर

१. कपटी शास्त्रीयों और फरीसियों (मत्ती २३:१३)
२. जकरयाह (मत्ती २३:३५)
३. गलाति कलीसिया (गला. ४:१९)
४. गायुस (रोमी १६:२३)
५. शारीरिक दशा में रहनेवाले (रोमी ८:८)
६. लुदिया (प्रेरित १६:१४)
७. हेरोदा
८. बोअस, रुत (मत्ती १:५)
९. नया यरुशलेम (प्रकाशित २१:१८)
१०. बाबिलोन (प्रकाशित १८:१०)

ASSEMBLIES OF GOD AG
We Prayerfully Invite You & Your Family
To Join Our Congregation
LIVING WAY A.G. CHURCH
14/1, Sunita Estate, Shastri Nagar, Opp. Jainan Hall,
L.B.S. Marg, Bhandup (W), Mumbai - 400 078.
Mob.: 93245 59533 / 98676 34153
Worship Timings Every Sunday
9.00 am to 10.30 am - Malayalam & English
10.30 am to 12.30 pm - Tamil & Hindi
5.30 pm to 7.30 pm - Hindi & English

www.thelivingway.in
YouTube : www.youtube.com/livingwayindia

जीवन की मार्ग मिषनरी सेवकाईयाँ

उद्धार पाया एक व्यक्ति के द्वारा होने को प्रभु हमेशा चाहता और विवश कर देता एक है, सुसमाचार का कार्य। अगर इस कार्य करने को नही हो सकता है तो वह व्यक्ति अपना आपसे निर्जीव है। कितना भी समस्या आने दो, या कितना भी निन्दित हो तब भी जारी रखने का और मृत्यु तक करते रहने का कार्य है प्रभु की सेवा। क्योंकि, मसीह का प्रेम हमे विवश कर देता है। (2 कुरि 5:14) जाना है, नही तो किसीओर को भेजना है। अनेक लोगों को पहुंचना मुश्किल है ऐसा जगह पर प्रभु के लोग पहुंचकर सुसमाचार प्रचार करते है। यह उद्धार पाया लोगों का विशेष जिम्मेदारी है कि, उनके लिये प्रार्थना करना। अनेक गाँवों में आज भी यह नही जानता है कि यीशु कौन है? कालवरी क्रूस पर दिया बलि के द्वारा छुडकारा प्राप्त करने को अनेक लोग यहाँ बाकि है। इस बात को प्रार्थना करनेवाले हर एक जन जाना चाहिए। मिषनरी सेवाकार्य में लगातार प्रार्थना जरूरी है। क्योंकि प्रार्थना के द्वारा ही इस सेवकाई आगे बडेगा।

हमारे सेवकाईयों को प्रभु आगे बडा रहा है। राजस्थान में शुरु किया 'शिलाई कोर्स' का 7 वां बॉच लगे रहने को प्रभु में शरण लेते है। साथी साथ गुजरात का सुरट जिल्हा में 'वसोवा' नाम की आदिवासियों के बीच सेवा शुरु करने को प्रार्थना कर रहा है। मार्च 5,6, दिनों में वहाँ पर होनेवाला सुसमाचार सभा के अनुग्रह और लोगों के उद्धार के लिए प्रार्थना करे। तमीलनाड् का वेल्लूर जिल्हा में 'ब्राह्मण-मण्डलम' नाम का स्थान में सेवा अच्छे से चल रहे है। मुंबई, थाना और रायगड जिल्हाओं के सेवकाई भी अच्छे से हो रहे है। प्रभु के इच्छा है तो, मार्च महीना में चन्द्रापूर जिल्हा के सेवा कार्य को देखने को जाना चाहता है। सारे सेवकाई को प्रभु आशिष देता है और बडा रहा है।

जीवमार्ग सेवा कार्य के मुख्य भी लक्ष्यों में एक है कि, महाराष्ट्र के 36 जिल्हा में भी - 'कलीसीया का स्थापना', अर्थात, कम से कम एक जिल्हा में एक कलीसिया। इस लक्ष्यों के साथ सेवा बड रह है। इसलिये आनेवाले पत्रिकाओं में महाराष्ट्र के बारे मे जानकारी देने वाले है। प्रार्थना में भाग लेते प्रियों, इस विषयों को लेकर प्रार्थना कीजिए। महाराष्ट्र के गाँवों में आगर सेवा करना चाहता है तो हम से संपर्क करे। इन सेवाओं केलिए मन से मदन देना चाहता है तो कृपया यह पढनेवाले मदत करे। आपके प्रार्थना विनंती हमें जरुरी है।

प्रार्थना योद्धा - जॉर्ज मुल्लर

Pr. Johnson Zecharia, Chennai

“जो लोग अंधकार मे बैठे थे, उन्होंने बडी ज्योति देखी, और जो मृत्यु के देश और छाया मे बैठे थे, उन पर ज्याति चमकी।” (मत्ती ४:१६)। यह मसीह है। हमारे साथ रहकर हमारा अंधकार को निकाल कर उजियाला देने को जन्म हुआ अनंत ज्योति। येशु ने बताया – मैं दुनिया का ज्योति हुँ। जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। (युहन्ना ८:१२)

यीशु मसीह ही ज्योति है, तो इस दुनिया के लागे भी ज्योति में चलने को प्रभु चाहते है। इसलिये पाप की अंधकार में रहते लोगों को बजाने को ज्योति के रूप में यीशु मसीह आया। इस दुनिया में रहते समय, अपनें साथ रहने को और सुसमाचार प्रचार करने को चेले को चुन्हा। चिन्ह और चमत्कार किया। शैतान के काम के द्वारा यहुदियों ने उसको क्रूस पर चढाया। पवित्र शास्त्र में लिखा हुआ, वा सब पुरा हाने को यह हुआ। लेकिन सिर्फ यहूदि लोगों को ही नहीं, सारे दुनिया के लोगों के सामने चमत्कार के जैसा तीसरा दिन जो उडा और आज भी जिन्दा है। और उस में विश्वास करने वालों को यह आज्ञा भी दिया है। (मत्ती २८:२०) हर एक जो इस प्रकार चेला बनता है वह इस आज्ञा को पालन करना ही है।

इस आज्ञा के अनुसार चले जाने का है। अनेक मसीही लोगों ने मसीहा दिया आज्ञा के अनुसार इधर उधर चलते हुए बहुत सारे लोगों को चेले बनाते रहते है। इसी प्रकार कलीसीया में बहुत बडा कार्य किया एक व्यक्ति हैं जॉर्ज–मुल्लर।

जन्म और बचपन

१८०५ सितं. २७ को जर्मनी के प्रष्या कोप्पन स्टेईट नगर में जन्म हुआ। साधारण माता–पिता के परिवार था और बाकि भाईयों से बडकर पिताजी उसको ज्यादा प्रेम किया। उसका बचपन में ही बुरे दोस्ती बनाया था। काली खेल में ज्यादा समय दोस्तों के साथ रहता था और शराब पीने में भी मन लगाकर गल्ली–गल्ली में गुमते रहा था। इसी प्रकार एक बुरे जिन्दगी में रहकर पुरा शैतान के आधीन में थे। क्यांकि पिता से पैसा मिलता था और यह लेकर सारे प्रकार के खर्च करने में दिन बिताता था।

शराब और बुरे कामों के लिये ही कार्य करता था और जब पैसा न है तो चोरि करने को भी तैयार था। किसी से भी उदारी लेता और वापस देता नही था। भोजन शाला में भी जा कर सामान लेता और किराया भी देत नही था। पिता से लेता पैसा बूट के अंतर छिपाके रखते थे।

इस बुरे आदत छोडने को कई बार सोचता था पर न होता था।

माता की मृत्यु

१८२० में, उसका १५-साल में मुल्लर की माता मर गयी। लेकिन इस समय पर भी उसका दोस्तों के साथ चलने में वो तैयार था? बीच में उसको मनफिराव आया, फिर भी यह उसमें रुपान्तर के रूप में न थे। आराधनालय में देने का पैसा भी चोरी किया और खर्च करके रहता था। माता के मृत्यु के बाद भी जीवन में किसी बदलाव न थे और पाप में जीवन बिताता था।

आलीशान जीवन के फल

माता के मृत्यु के बाद दोस्तों के साथ ही रहकर तमाशा कर रहे थे। इतिहास कहानीयाँ बताने में भी वो उत्सुक थे। आलीशा जीवन में तत्पर हुआ मुल्लर बडे होटल में किराय को रहते थे। लेकिन पैसा न देते थे। एक दिन हमेशा कि जैसा होटल का खिटकि से बाहर निकलते हो उसको पकडा और जैल में डाला था। वैसा बचपन में ही एक महिना जेल में रहना पढा। लेकिन, पिता उसको वहाँ से छुडाया था। वह जैल का समय एकदम कठिन थे।

बुरे जिन्दगी है तो भी पढने का आदत बडाया और यह ज्ञान में बडने को मौकी दी। उस समय करीब ३०० पुस्तकें पढते थे। लेकिन बैबल पढने को मन न था। बेटा का बुरे आदत से जाने को पिताजी उसको डा. नागसीन के साथ रहने को भेजा लेकिन वहाँ से 'हाले' कोलेज में चले गये। वहाँ पढने का साथ व्यायाम को भी लगे रहे थे। उसके साथ लाटीन, फ्रन्च, जर्मन, अंग्रेजी, हीब्रु और ग्रीक भाषाएँ सीखा ज्ञान में बढकर ज्योती आ गया। उस ज्योति चमकने लगा। ...... Contd. ●

बाइबिल क्वीस

१. स्वर्गराज मे वो प्रवेश न करते है, और दुसरे लोग स्वर्गराज्य में जाने को नहीं देते है। यह कौन है?
२. मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला गया व्यक्ती कौन है?
३. कौनसा कलीसिया केलिये पौलूस जय्या की सी पीडा सहने है?
४. कलीसीया के लिए पदनाई किया व्यक्ति कौन है?
५. किसने परमेश्वर को प्रसन्न करना न होता है?
६. बैंजनी कपडे बेचनेवाली बहन कौन है?
७. किसको यीशु लोमडी जैसा कहलाया था?
८. ओबेद का माता-पिता कौन है?
९. स्वच्छ काँच के समान बनाया हुआ शहर कौन सा है?
१०. एक ही पडी में दण्ड मिला शहर कौन सा है?

उत्तर - पेज नं १२

“देख मैं इस नगर का
इलाज करके इसके
निवासियों को
चंगा करूँगा;
और उन पर पूरी शांती
और सच्चाई प्रकट करूँगा।”

यिर्मयाह 33:6

www.thelivingway.in

Edited & Published by : Pr. LIVINGSTON ZECHARIAH,
on behalf of The Living Way Ministires, Mumbai - 400 078.